International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1073-1075

शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की तलाश: सखारोव के विशेष संदर्भ में

डॉ॰ शंभू जोशी

असिस्टेंट प्रोफेसर, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, मानस मंदिर, गांधी हिल्स, वर्धा, महाराष्ट्र, भारत।

सारांश

आंद्रेई दिमित्रीविच सखारोव रूसी परमाणु भौतिकशास्त्री और रूसी मानवाधिकार आंदोलन के प्रमुख नेताओं में से थे। शीतयुद्ध के समय में सोवियत रूस में रहते हुए विज्ञान को राजनीतिक मतवाद (State Doctrine) से मुक्त रखने तथा नागरिक स्वतंत्रताओं पर बल दिया। 1968 में अपनी प्रसिद्ध रचना "Reflection of Progress, Peaceful Co- existence and Intellectual Freedom" में पूर्व-पश्चिम सहयोग, नागरिक स्वतंत्रताओं पर जोर तथा हथियारों की प्रतिस्पर्धा बंद करने की वकालत की । 1975 में नोबल शांति पुरस्कार प्राप्त सखारोव ने आणविक निःशस्त्रीकरण और मानवाधिकार हनन के प्रति लगातार आवाज को मुखर किया। शीतयुद्ध के संकट पूर्ण समय में उन्होंने समस्त मानवता को एक मानकर अपना चिंतन प्रस्तुत किया। तात्कालिक विश्व के सामने प्रस्तुत जिन चुनौतियों का जिक्र सखारोव ने किया कमोबेश वह आज भी हमारे सामने खड़ी हैं। एक आशावादी विचारक होने के नाते सखारोव ने शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की प्राप्ति का एक व्यावहारिक विकल्प भी बताया जो आज भी हमारे लिए आवश्यक है। एकध्रुवीय विश्व एवं लगातार हिंसक होते समय में एक शांतिपूर्ण सहअस्तित्व के आधार पर विश्व के नवनिर्माण की संरचना करते हुए हमें सखारोव से अवश्य गुजरना होगा।

Keywords: peace, co-existence, nuclear disarmament, freedom, human rights

1. प्रस्तावना: जीवन और कृतित्व

आन्द्रेई दिमित्रीविच सखारोव (मई 21, 1921 - दिसम्बर 14,1989) विख्यात रूसी परमाणु भौतिकशास्त्री और मानवाधिकार समर्थक थे। इन्हें सोवियत एटम बम का जनक' भी कहा जाता है। इनका जन्म 21 मई 1921 को मास्को के एक बौद्धिक परिवार में हुआ। इनके पिता भी भौतिकशास्त्री थे। सखारोव प्रारंभ से ही प्रतिभाशाली विद्यार्थी रहे। मास्को विश्वविद्यालय में इगोर टाम के (Igor Tamm) अधीन अध्ययन किया। इगोर टाम को भौतिक सैद्धान्तिकी का नोबल पुरस्कार 1958 में मिला था। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान सखारोव ने सैनिक कारखाने में अभियन्ता के रूप में कार्य किया। 1945 में लेबदेव इन्स्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स में भर्ती हुए और इसी वर्ष परमाणु हथियारों के शोध अध्ययन समूह का हिस्सा बने। 1953 में मात्र 32 वर्ष की आयु में सोवियत एकेडमी ऑफ साइंसेस में सर्वाधिक युवा व्यक्ति के रूप में चुने गए। 1950 से 1968 तक थर्मोन्यूक्लियर हथियार सम्बन्धी गुप्त शोध पर कार्य किया। 1950 के दशक में नाभिकीय परीक्षण हेतु मना किया। ख्रुश्चेव ने सोवियत शिक्षा व्यवस्था में व्यावहारिक कार्य पर बहुत बल दिया कि हर विद्यार्थी को अपने विद्यालय समय को एक तिहाई हिस्सा मैदानों/कारखानों में बिताएं। ख्रुश्चेव ने कला विषय के विशेष प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को इससे छूट दी अन्य किसी को नहीं। सखारोव तथा उनके साथी जेल्डोविच ने इस का विरोध किया, विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए भी छूट की माँग की। उनका तर्क था कि विद्यार्थी जीवन बहुत ही सृजनात्मक होता है और किसी भी विषय में गहराई से अध्ययन करना एवं प्रायोगिक कार्य करके एक नवीन सिद्धान्त की खोज करना एक प्रकार से समाज सेवा ही है। इसके साथ ही सखारोव ने रूसी गणित के पाठ्यक्रम में संशोधन का प्रस्ताव दिया कि गणित के नवीन सिद्धान्तों जैसे - संभाव्यता सिद्धान्त आदि को समाविष्ट किया जाए। 1958 में प्रावदा (दैनिक समाचार पत्र) ने उनका एक आलोचनात्मक लेख छापा जिसमें सखारोव ने गणित एवं भौतिकी के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सुदूर क्षेत्र में जाकर खेतों में काम करने की अनिवार्यता से अलग रखने की बात कही थी। 1960 के दशक के प्रारम्भिक वर्षों में सखारोव ने विज्ञान अध्ययन में मेण्डल और मोर्गन सिद्धान्तों का समर्थन किया। रूसी विद्वान इवान वी. मुचिरिन ने एक सिद्धान्त दिया कि पर्यावरण वनस्पति की वंशानुगतता (हेरीडिटी) बदल सकता है। इसी सिद्धान्त को रूसी कृषि विशेषज्ञ टी.डी. लाइसेन्को ने काफी विस्तार प्रदान किया। स्टालिन का सहयोग पाकर लाइसेन्को ने रूसी वैज्ञानिक क्षेत्र में एक तरह की तानाशाही स्थापित की। ख्रुश्चेव के समय फिर कुछ समय के लिए इन्होंने अपनी पुरानी सत्ता बनाई। इस दौरान अपने से भिन्न मत रखने वाले बहुत से प्रतिभाशाली विद्वानों वैज्ञानिकों को प्रताड़ित किया। सखारोव ने ने दो विशेषज्ञों वी.पी. इफ्रोइमिसिन व एफ.डी. श्येपोटयेव के साथ मिलकर सोवियत विज्ञान को इसे सत्ता द्वारा नियंत्रित वैज्ञानिक दृष्टि से अलग करने का प्रयास किया। विज्ञान की स्वतन्त्रता को राजनीतिक हस्तक्षेप से बचाने का जोरदार प्रयास किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि वैज्ञानिक शोध कैसे हो? क्या हों? यह राज्य तय नहीं कर सकता। विज्ञान को राजनीतिक मतवाद (State doctrine) के अधीन नहीं रखा जा सकता है। विज्ञान की अपनी प्रक्रिया है जिसके जरिए वह अपने सिद्धान्तों को प्राप्त करता है। इस प्रक्रिया को राजनीतिक सिद्धान्तों के अधीन /द्वारा निर्धारित नहीं किया जा सकता है ।1963 में सोवियत संघ के Partial Test Ban Treaty पर हस्ताक्षर करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सखारोव प्रारंभ से ही नाभिकीय धुरवीकरण एवं नाभिकीय हथियारों की दौड़ के प्रति सचेत रहे तथा समय-समय पर अपने विचारों से सोवियत रूस के लोगों एवं नीति-निर्धारकों को अवगत कराते रहे। ब्रेझनेव के शासन काल में स्टालिन-नीतियों के पुनः लागू किए जाने की संभावनाओं को लेकर अपनी असहमति दर्ज कराई। इसके लिए सोवियत रूस के 25 बौद्धिकों एवं रचनाकारों के साथ मिलकर हस्ताक्षर युक्त ज्ञापन दिया। जिसमें उल्लेख किया गया कि स्टालिन की नीतियों की पुनर्स्थापना सोवियत रूस के विरोध में होगी। कम्युनिस्ट पार्टी की 23वीं बैठक में स्टालिन-नीतियों की पुनर्स्थापना को खारिज कर दिया गया। इस स्पष्ट है कि सोवियत रूस के बौद्धिकों एवं रचनाकारों के उस ज्ञापन का महत्व स्वीकार किया गया जिसे बनाने में सखारोव ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1966-67 में सखारोव ने स्टालिन की पुरानी नीतियों का लागू करने का विरोध करते हुए नागरिक स्वतन्त्रताओं पर बल दिया।1968 में चेकोस्लोवाकिया

पर सोवियत आक्रमण की कड़ी निंदा की। 1968 में न्यूयार्क टाइम्स में छपे अपने निबन्ध/लेख Reflections of Progress, Peaceful Coexistence and Intellectual freedom लिखा । जिसमें पूर्व-पश्चिम सहयोग, नागरिक स्वतंत्रताओं पर जोर एवं हथियारों की प्रतिस्पर्धा बंद करने की वकालत की गई । इसके प्रकाशित होते ही सखारोव को समस्त वैज्ञानिक शोधों से हटा लिया गया। 1970 के दशक में सखारोव सोवियत संघ में सर्वाधिक प्रबल असहमति के प्रतीक बने। 1970 में मास्को ह्यूमन राइट्स कमिटी के सह-संस्थापक बने। दिसम्बर 1979 में अफगानिस्तान में सोवियत हमले की भर्त्सना की। जनवरी 1980 से 1986 तक उन्हें मास्को से गोर्की नामक स्थान पर निर्वासित कर दिया गया जहाँ वह अपने परिवार,मित्रों,वैज्ञानिक साथियों से दूर रखे गए। सोवियत संघ की राजनीति में गोर्बाच्योव के आगमन के बाद उन्हें 1989 में मास्को आमंत्रित किया गया। सखारोव 1989 में सोवियत संसद में चुने गए तथा नये संविधान को बनाने में भूमिका निभाई। अपने कार्यकाल में उन्होंने राजनीतिक बन्दियों के लिए एमनेस्टी, निःशस्त्रीकरण, नस्लीय विवादों के शांतिपूर्ण समाधानों तथा सत्ता के प्रमुख केन्द्रों की शक्तियों को सीमित करने पर जोर दिया। 1975 में सखारोव नोबल शांति पुरूस्कार पाने वाले पहले सोवियत नागरिक बने। यह शांति पुरूस्कार उन्हें आणविक निःशस्त्रीकरण एवं मानवाधिकार हनन के प्रति आवाज मुखर करने हेतु प्रदान किया गया। 1986 में गोर्ब्याचोव शासनकाल में देश ने उन्हीं नीतियों पर चला जिनकी वकालत करने के आरोप में सखारोव को निर्वासित किया गया। सखारोव ने अनुभव किया कि एक वैज्ञानिक होने के नाते सहानुभूति,स्वतन्त्रता, सत्य जैसे जिन आदर्शों को आगे बढ़ाया, वह शस्त्रों की अंधी दौड़ या राज्य साम्यवाद के प्रभुसत्तावादी शिकंजा साथ-साथ नहीं चल सकते हैं। अपने उदाहरण से सखारोव ने प्रस्तुत किया कि बौद्धिक वर्ग समाज में एक रचनात्मक भूमिका निभा सकता है। अन्य देशों में तानाशाही के अधीन काम करने वाले वैज्ञानिकों के समक्ष एक आदर्श रखा कि किस तरह से लोकतंत्र की लड़ाई में वैज्ञानिक अपनी भूमिका निभा सकते है।

2. शांतिपूर्ण सह अस्तित्व संबंधी खतरे

एक वैज्ञानिक होने के नाते उनका विचार था कि विज्ञान तर्क के आधार पर संचालित है। अतः लोकतंत्र में भी वस्तुनिष्ठ सत्य पर वैज्ञानिक प्रक्रिया के जरिए पहुँचा जा सकता है। इसमें लोकतांत्रिक सहमति की बड़ी भूमिका है जिसमें तथ्यों का अध्ययन, भ्रांतधारणाओं का नकार एवं खुला विमर्श सम्मिलित है। एक भौतिकशास्त्री होने के कारण उनका तर्क था कि चूंकि भौतिकी के नियम स्थिर होते है और समस्त प्रकृति पर लागू होते हैं इसलिए कुछ निश्चित मानवीय मूल्य जैसे - स्वतन्त्रता और वैयक्तिक सम्मान का आदर आदि सार्वभौमिक एवं अनुल्लंघनीय है।

सखारोव ने एक बेहतर विश्व का सपना देखा। यह स्वप्न ऐसे समय में आया जब विश्व दो धुरवों की आपसी प्रतिद्वन्द्विता में स्वयं को आंतकित महसूस कर रहा था। युद्ध और संघर्ष की आकांक्षाएं लगातार लोगों को भयभीत कर रही थी। 1968 में न्यूयार्क टाइम्स में छपे अपने निबन्ध/लेख Reflections of Progress, Peaceful Coexistence and Intellectual freedom में सखारोव ने निम्न खतरों के प्रति सचेत किया –

1. आणविक युद्ध का खतरा सारे विश्व पर छाया है। शक्तिशाली देशों द्वारा इन्हें विकसित करने पर अन्य देश भी बनाने को उद्यत होंगे। इतिहास बताता है कि शक्ति-संतुलन के तर्क पर ही शस्त्रीकरण तेजी से हुआ है। शस्त्रीकरण युद्ध के खतरे को बढ़ाता है।
2. भूखमरी समस्त मानवता के लिए खतरा है। दो धुरवों में विभाजित विश्व की जनता इससे मुक्त नहीं है। दोनों ही धुरवों की विचारधारा भूखमरी को समाप्त नहीं कर पाई है। भूखमरी का बने रहना एक तरह से युद्ध को आमत्रंण ही है।
3. मनुष्यता के भीतर मास कल्चर के नाम पर संवेदनहीनता पैदा की जा रही है। बड़े पैमाने पर यह मास कल्चर व्यक्ति के विवेक को कुंद कर रही है। उपभोक्ता संस्कृति का विवेकहीन समर्थन शांति के लिए खतरा है।
4. नौकरशाही /प्रशासन की कट्टरता मानवीय भावनाओं को तरजीह नहीं देती है। दोनों ध्रुवों की विचारधारा ने अमानवीय नियमों का पोषण किया। प्रशासन मूलभूत मानवीय जरूरतों के प्रति असंवेदनशील है।
5. तानाशाह/सत्तापक्ष व्यापक मिथकों का प्रसार कर वर्तमान व्यवस्था को सामान्य जन के सामने ऐसा प्रस्तुत करता है कि लगता है कि वर्तमान व्यवस्था ही सर्वश्रेष्ठ व्यवस्था है। आम जनता इन्हीं मिथकों के धुँआधार प्रसार को सत्य मान कर व्यवहार करती है। ऐसा कर तानाशाह/सत्तापक्ष अपनी अधीनता जनता पर थोप देते हैं।
6. मानवता के लिए एक बहुत बड़ा खतरा पर्यावरण में होने वाला प्रदूषण एवं घातक परिवर्तन है जिसने समस्त मानवता के अस्तित्व के लिए संकट खड़ा कर दिया है। औद्योगिक प्रगति के नाम पर सभी देशों में पर्यावरण को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है।

3. शांतिपूर्ण सह अस्तित्व के उपाय

सखारोव स्पष्ट करते है एक ओर पूँजीवादी देशों को अनुभव हुआ है कि जनता को सामाजिक सुरक्षा उपलब्ध कराना आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर साम्यवादी देशों को लोकतंत्रिक व्यवस्था का महत्व अनुभव हो रहा है। दोनों ही धुरवों की व्यवस्थाएं यह समझने लगी है कि स्वयं में परिवर्तन करना जरूरी है। एक सखारोव मानवता के सम्मुख उपस्थित समस्याओं को हल करने हेतु एक प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं -

1. सभी देशों को शांतिपूर्ण सहअस्तित्व को बढ़ाने वाली रणनीतियाँ बनानी चाहिए। जिन बातों में विरोध है,उन्हें छोड़ कर जिन बातों में सहमति है उनके बारे में एक साझी रणनीति सभी देशों को बनानी चाहिए।
2. समस्त मानवता के लिए कलंक भूखमरी को समाप्त करने के लिए सभी पक्षों को साझा प्रयास करना चाहिए। शांतिपूर्ण सहअस्तित्व की ओर पहला प्रयास भूखमरी से लड़ने के लिए साझा रणनीति हो सकती है।
3. बौद्धिक स्वतंत्रता सबसे महत्वपूर्ण है। सभी तरह की शासन-व्यवस्थाओं में बौद्धिक स्वतंत्रता को सीमित किया गया है। यह एक तरह से तानाशाही को ही आमंत्रण है। एक धुरव में मासकल्चर एवं मीडिया ग्रुप पर प्रत्यक्ष संरशिप है वहीं दूसरे धुरव में अप्रत्यक्ष सेंसरशिप हे मुख्यधारा से अलग लेखक को परेशान किया जाता है। केवल बौद्धिक स्वतंत्रता ही नहीं बल्कि यह स्वतंत्रता जिन साधनों के माध्यम से अभिव्यक्त होती है उनकी उपलब्धता भी जरूरी है। सखारोव इस हेतु चार बिन्दु बताते हैं-
   - स्व-अध्ययन (Self Study)
   - निर्भिक विमर्श (Fearless Discussion)
   - सत्य की तलाश (Search for Truth)
   - विचार स्वातन्त्रय हेतु भौतिक संसाधन (Material Resources of Freedom of Thoughts)
4. विश्व स्तर पर किसी भी राष्ट्र का कानून जो मानव अधिकारों,लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन करता हो, उसे मानवता विरोधी कहना चाहिए।
5. कोई भी व्यवस्था हो उसे अपने विचार एवं कार्य में संयुक्त राष्ट्र के सार्वभौमिक मानव अधिकारों के घोषणा पत्र का सम्मान करना चाहिए। राष्ट्र की आस्था इस पर होनी चाहिए।
6. जितने भी राजनीतिक बंदी (political prisonars)हैं, उन्हें एमनेस्टी मिलनी चाहिए।

7. सभी देशों आपस में आर्थिक, सांस्कृतिक, सांगठनिक समस्याओं को सुलझाने में सहयोग करे, ऐसी व्यवस्था बनाई जानी चाहिए।
8. भूखमरी को समाप्त करने वाले एवं अविकसित राष्ट्रों के विकास हेतु विकसित राष्ट्रों पर 15 वर्ष के लिए एक कर लगाना चाहिए। यह कर विकसित राष्ट्रों की राष्ट्रीय आय का 20%होना चाहिए।

सखारोव इसलिए भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं कि सैनिक वैज्ञानिक शोधों -मूलतः हाइड्रोजन बम- में लगे रहने के कारण उसकी व्यर्थता एवं विनाशकारी परिणामों से अवगत है। उसका भान पूरे विश्व को कराना चाहते हैं। इसीलिए सखारोव ने शीतयुद्ध के समय में दोनों धुरवों के बीच तनाव कम करने का प्रयास किया। महत्वपूर्ण यह है कि जो मुद्दे सखारोव ने उठाए हैं वे शीतयुद्ध की सीमाओं तक ही सीमित नहीं हैं, वे मानवीय कल्याण एवं अस्तित्व से जुड़े गंभीर मुद्दे हैं। आज शीतयुद्धसमाप्त हो चुका है और सोवियत संघ बिखर गया है मगर जहाँ कहीं भी तानाशाही है वहाँ सखारोव एक अंसतोष के प्रेरक है।

संदर्भ

1. Lozansky, Edward D. Andrei Sakharov and Peace, Avon, 1985.
2. Gorelik, Gennady, Antonina W. Bouis. The World of Andrei Sakharov: A Russian Physicist's Path to Freedom. Oxford University Press, 2005.
3. Sakharov Speaks. Edited by Harrison E. Salisbury. New York: Knopf, 1974.
4. Sakharov, Andrei, Memoirs. Alfred A. Knopf, New York, 1990.
5. Andrei Dmitrievich Sakharov: Biography. Available from http://asf.wdn.com/. Accessed 23 December 2011.